IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के स्व-विनियमित अधिगम का शैक्षिक उपलब्धि से सहसंबंध।

प्रीति दुबे
(शोध छात्रा)
शिक्षा संकाय
जे॰वी॰ जैन कॉलेज सहारनपुर

डॉ॰ शुभ्रा चतुर्वेदी
(प्रोफेसर)
शिक्षा संकाय
जे॰वी॰ जैन कॉलेज सहारनपुर

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के स्व नियमित अधिगम का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सहसंबंध का अध्ययन है।इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है तथा प्रतिदर्श के लिए सहारनपुर जिले के आठ माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 12 में अध्ययनरत 240 छात्र छात्राओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के द्वारा किया है। आंकड़े एकत्र करने के लिए उपकरण के रूप में डॉक्टर मधु गुप्ता एवं डिम्पल मथानी द्वारा निर्मित स्व विनियमित अधिगम मापनी का तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिये कक्षा 11 के वार्षिक परीक्षा के परिणामों को लिया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए कार्ल पीयरसनके प्रॉडक्ट मूवमेंट विधि का उपयोग किया है

Key Word – स्व-विनियमित अधिगम ,शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

वर्तमान की शैक्षणिक और सामाजिक संसार में स्व-विनियमित सीखने को समझना आवश्यक है। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए इन उपलब्धि क्षमताओं के विकास में आत्म-नियमन की अवधारणा को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन में, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में स्व-विनियमित सीखना और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन करते हैं।

ज़िम्मरमैन और शंक स्व-विनियमित विचारों, भावनाओं और कार्यों के संदर्भ में स्व-विनियमित सीखने को परिभाषित करते हैं, जो व्यवस्थित रूप से छात्रों की प्राप्ति की ओर उन्मुख हैं "स्वयं के लक्ष्यों को स्व-विनियमित सीखने में एक स्व-आरंभिक कार्रवाई है जिसमें लक्ष्य निर्धारण और किसी के प्रयासों को विनियमित करना शामिल है लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, स्व-निगरानी (मेटाकॉग्निशन), समय प्रबंधन, और भौतिक और सामाजिक पर्यावरण विनियमन इस स्थिति के अनुसार, एक शिक्षार्थी अक्सर निगरानी, नियंत्रण और प्रतिक्रिया के अनुसार कार्य के माध्यम से प्रगति करते हुए लक्ष्यों और योजनाओं को बदल देता है और अध्ययन करता है। प्रक्रियाएं। इसका मतलब है, स्व-विनियमित शिक्षार्थी उद्देश्यपूर्ण हैंऔर लक्ष्य उन्मुख, अपने शैक्षणिक प्रदर्शन को अनुकूलित करने के लिए डिज़ाइन किए गए विभिन्न प्रकार के रणनीतिक व्यवहारों को शामिल करना और लागू करना।

स्व-विनियमित शिक्षार्थी सफल होते हैं क्योंकि वे अपने सीखने के माहौल को नियंत्रित करते हैं। वे अपने सीखने के लक्ष्यों की दिशा में अपने कार्यों को निर्देशित और विनियमित करके इस नियंत्रण को लागू करते हैं। स्व-विनियमित शिक्षा का उपयोग सीखने के तीन अलग-अलग चरणों में किया जाना चाहिए। पहला चरण प्रारंभिक सीखने के दौरान होता है, दूसरा चरण तब होता है जब सीखने के दौरान आने वाली किसी समस्या का निवारण किया जाता है और तीसरा चरण तब होता है जब वे दूसरों को सिखाने की कोशिश कर रहे होते हैं।

स्व-विनियमित शिक्षार्थी अपनी सीखने की क्षमता को प्रभावी ढंग से नियमित करते हैं और विभिन्न तरीकों (शंक और ज़िम्मरमेन, 1994) का उपयोग करते हैं। दूरदर्शी दृष्टिकोण से, स्व-विनियमित शिक्षार्थी अपनी सफल शिक्षा के लिए व्यापक संज्ञानात्मक और मेटा-संज्ञानात्मक रणनीतियों का उपयोग करते हैं। वे इसे ठीक से पूरा करने के लिए शैक्षिक कार्य की आवश्यकता के अनुसार अपने लक्ष्यों और प्रेरणाओं को समायोजित करने में सक्षम हैं (शंक, 1994)। जिन शिक्षार्थियों ने अधिक स्व-विनियमित रणनीतियों का उपयोग किया, उनमें बेहतर आंतरिक प्रेरणा, आत्मविश्वास की धारणा और बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि (पिंट्रिच और डी ग्रोट, 1990) है। स्व-विनियमित शिक्षार्थी विश्वास, ध्यान और सरल के साथ अकादमिक कार्य का उपयोग करते हैं, और ज्ञान की उनकी प्राप्ति को नियंत्रित करते हैं। स्व-विनियमित शिक्षार्थी एक प्रणालीगत और प्रबंधनीय संचालन के रूप में सीखने का अनुभव करते हैं और वे अपने प्राप्त परिणामों (ज़िम्मरमैन और मार्टिनेज-पोंस, 1986, 1990) के लिए महत्वपूर्ण दोषी मानते हैं।

ज़िम्मरमैन (2000) ने शिक्षा के क्षेत्र में बंडुरा के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत के आधार पर स्व-विनियमित सीखने की अवधारणा का विस्तार और विकास किया। स्व-विनियमन को “उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें छात्र सक्रिय रहते हैं और अनुभूति, व्यवहार और प्रभाव को बनाए रखते हैं, जो लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर उन्मुख हैं” (ज़िम्मरमैन, 1989; शंक, 1994)।

शैक्षिक उपलब्धि

विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है तथा इन्हीं शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न कक्षाओं का पाठ्यक्रम निर्धारित होता है एवं इन शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। इन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति विद्यार्थियों ने किस सीमा तक प्राप्त किया है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि होती है।

सी. वी. गुड (1976) "विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी विषयों में प्राप्त ज्ञान व विकसित कौशल सामान्यता शिक्षकों द्वारा विकसित किया जाता है। उपलब्धि शब्द को प्राप्त सम्पूर्ण ज्ञान और कौशल के प्रदर्शन की उपलब्धि व प्रवीणता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

स्व-विनियमित शिक्षण को छात्र शैक्षणिक प्रेरणा और उपलब्धि के एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता के रूप में मान्यता प्राप्त है। शैक्षणिक सीखना स्व-विनियमन सीखने की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है जिसके द्वारा छात्र शैक्षणिक ज्ञान के अपने अधिग्रहण को निर्देशित करते हैं। स्व विनियमित अधिगम छात्रों को अपने स्वयं के संसाधनों का प्रबंधन करने और सभी सीखने कि प्रक्रियाओं में बेहतर प्रदर्शन करने के अवसर प्रदान करता है। स्व-विनियमित शिक्षार्थी अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रियाओं के लिए जिम्मेदारी लेते हैं और अपनी मांगों को पूरा करने के लिए अपनी सीखने की रणनीतियों को अपनाते हैं। छात्र अपने स्वयं के सीखने को नियंत्रित करने और विनियमित करने के लिए विभिन्न संज्ञानात्मक, मेटा-संज्ञानात्मक, व्यवहारिक, प्रेरक

और पर्यावरणीय रणनीतियों का उपयोग करते हैं। ये रणनीतियाँ स्व विनियमित अधिगम में सहायता करती हैं और साथ ही साथ अच्छी शैक्षणिक उपलब्धि की ओर ले जाती हैं। उपलब्धि छात्रों का मुख्य लक्ष्य है जो उन्हें सफलता दिलाई।

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के स्व विनियमित अधिगम व शैक्षिक उपलब्धि मे सहसंबंध का अध्ययन करना ।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं के स्व विनियमित अधिगम व शैक्षिक उपलब्धि मे सहसंबंध का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के स्व- विनियमित अधिगम व शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं के स्व-विनियमित अधिगम व शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य मैं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में जनसंख्या से तात्पर्य जनपद सहारनपुर के सभी माध्यमिक विद्यालयो मैं कक्षा 12 में अध्यनरत सभी छात्र छात्राओं से है।

प्रतिदर्श

शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में 240 छात्र छात्राओं का चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयोग होने वाले उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़े एकत्र करने के लिए डॉ मधु गुप्ता एवं डिम्पल मथानी द्वारा निर्मित स्व विनियमित अधिगम मापनी एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए कक्षा 12 में अध्यनरत छात्र छात्राओं की विगत परीक्षा अर्थात कक्षा 11 की वार्षिक परीक्षा प्राप्तांकों को लिया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक 1-

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के स्व- विनियमित अधिगम व शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।

सारिणी क्रमांक -1

क्रम संख्या	चर	समूह	छात्रों कि संख्या (N)	सहसंबंध गुणांक
1	स्व- विनियमित अधिगम	छात्र	120	-0.13
2	शैक्षिक उपलब्धि	छात्र	120	-0.13

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के स्व विनियमित अधिगम एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबंध गुणांक -0.13 है अर्थात छात्रों का स्व विनियमित अधिगम उनकी शैक्षिक उपलब्धि से ऋणात्मक सह संबंध रखता है।

निष्कर्ष निकलता है कि छात्रों के स्व विनियमित रूप से सीखने पर भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम होती है।

परिकल्पना क्रमांक 2-

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओ के स्व- विनियमित अधिगम व शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।

सारिणी क्रमांक -2

क्रम संख्या	**चर**	**समूह**	**छात्रों कि संख्या (N)**	**सहसंबंध गुणांक**
1	स्व- विनियमित अधिगम	छात्राओं	120	. 07
2	शैक्षिक उपलब्धि	छात्राओं	120	. 07

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं के स्व विनियमित अधिगम एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबंध गुणांक . 07 है। अर्थात छात्राओं का स्व विनियमित अधिगम उनकी शैक्षिक उपलब्धि से आंशिक धनात्मक सह संबंध रखता है।

निष्कर्ष निकलता है कि छात्राओं के स्व विनियमित रूप से सीखने से उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Banarjee, Payal & kumar Kamlesh (2014) A Study On Self Regulated Learning and Academic Among The Science Graduate Students; International Journal Of Multidisciplinary Approach And Science volume 01, NO 6, ISSN(Online) 2348-537x

2. Zimmerman, Barry. J)1990) Self Regulated Learning And Academic Achievement An Overview;Educational Psychologist Information UK Limited 25(1), 3-17

3. द्विवेदी, प्रीति (2014) माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के विद्यालयी वातावरण मानसिक स्वास्थ्य व अधिगम शैली के परिपेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन; शोध प्रबंध छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

4. गुप्ता, एस०पी० (2020) अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय कार्यविधिं एवं प्रविधि; शारदा पुस्तक भवन ,प्रयागराज

5. Kavita (2015) Self Regulated Learning Among Secondary School Students In Relation To Their Motivationals Belefs And Perceived Parental Involvement, Panjab University Chandigarh

6. http://en.m.Wikipedia.Org Self Regulated Learning